इकाई 26 औद्योगिक वर्ग

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- वर्ग व्यवस्था की उत्पत्ति जान सकेंगे,
- वर्ग व्यवस्था और औद्योगिक समाज में संबंध पहचान सकेंगे,
- पूँजीवादी एवं समाजवादी विचारधाराओं की विशेषताएँ को समझ सकेंगे, तथा
- मार्क्स एवं वेबर के औद्योगिक वर्ग के बारे में विचारों पर चर्चा कर सकेंगे।

26.1 प्रस्तावना

सामाजिक वर्ग शब्द का प्रयोग अठारहवीं शताब्दी में महत्वपूर्ण हुआ। प्राय: लोग इस शब्द का प्रयोग सम्पत्ति की अवधारणा की श्रेणी की स्थिति बताने के लिए प्रयोग करते थे। अमेरिकन और फ्रांसीसी क्रांति से वर्ग व्यवस्था में असमानता सिद्धांत के अध्ययन करना महत्वपूर्ण विषय

बन गया। इस शब्द का पहली बार प्रयोग सेंट सिमोन ने सम्पत्ति जो स्थिति बताती थी के स्थान पर किया। इस प्रकार वर्ग शब्द की संकल्पना मार्क्स से पहले की है। सामाजिक वर्ग का संबंध उपलब्ध स्थिति एवं उससे जुड़े अन्य लाभों से है अर्थात् इसमें व्यक्ति के गुण, कुशलता और योग्यता का विकास करने की प्रवृत्ति होती है। वास्तव में सामाजिक वर्ग व्यक्तियों के समूह होते हैं। लेकिन ये समूह वैधानिक या धार्मिक रूप से स्वीकृत नहीं होते। औद्योगिक समाजों में अलग विशेषताएँ होती हैं। सामाजिक वर्ग व्यक्ति की सामाजिक स्थिति दर्शाते हैं। इसकी प्रवृत्ति व्यक्ति की योग्यता, उपलब्धियों का उत्थान करने की होती है।

विद्वानों के बीच वर्गों में सदस्यों का निर्धारण करने पर मतभेद है। फिर भी अधिकांश समाजशास्त्री निम्नलिखित वर्गों की विद्यमानता से सहमत हैं :

क) उच्च वर्ग (मालिक)
ख) मध्य वर्ग (सफेदपोश श्रमिक)
ग) मज़दूर (श्रमिक वर्ग)

कुछ समाजों में चौथा वर्ग अर्थात कृषक वर्ग भी माना जाता है।

26.2 वर्ग व्यवस्था की उत्पत्ति

अधिकांश वर्ग व्यवस्था इस धारणा पर आधारित है कि 'जन्म से सभी व्यक्ति स्वतंत्रा एवं एक समान है' परंतु वर्ग व्यवस्था का वास्तविक रूप उसके दिखाई देने वाले रूप से भिन्न है। अतः कुछ व्यक्ति कह सकते हैं कि वर्ग व्यवस्था का कोई वैचारिक आधार नहीं है। यह एक अवशिष्ट श्रेणी है। समाज में वर्ग संरचना के अनेक कारण हैं, कुछ महत्वपूर्ण कारण इस प्रकार हैं :

i) उत्पादकता में श्रमिक बल में आवश्यकता से अधिक विस्तार
ii) परिवार से बाहर श्रम विभाजन का विस्तार
iii) अत्यधिक फालतू धन का संचय
iv) संसाधनों पर निजी स्वामित्व

26.2.1 वर्ग संरचना की विशेषताएँ

वर्ग व्यवस्था की कुछ विशेषताएँ हैं जो इस प्रकार हैं :

i) सामाजिक वर्गों का सोपानात्मक क्रम : विशेषाधिकार और भेदभाव के संदर्भ में वंश परंपरा होना।
ii) वर्ग स्वार्थों का स्थाई विचार।
iii) वर्ग जागरूकता, वर्गों की चेतना, वंश परंपरा, पहचान और परस्पर निर्भरता की विद्यमानता वर्ग व्यवस्था का माप है सामाजिक भिन्नताएँ। वर्ग विशिष्टताएँ असमानता और वर्ग सीमाओं के रूप में अभिव्यक्त होती है।

वर्ग संरचना को समझाने के दो तरीके हैं :

i) श्रेणीकरण की योजनाएँ
ii) परस्पर निर्भरता आधारित संबंधों की विशेषताएँ
   क) एक तरफ निर्भरता
   ख) परस्पर निर्भरता

सामाजिक संबंधों को समझने की एक व्यवस्था है प्राय: एक पर दूसरे की अधीनता। कुछ समाजशास्त्रियों का वर्ग के बारे में विचार है कि विजय के रूप में विजेता उच्च वर्ग का तथा पराजित निम्न वर्ग का होता है।

वर्ग विकास के संबंध में प्राय: पूछा जाता है कि क्या सामाजिक वर्ग आधुनिक समकालीन समाजों की विशेषता है। अर्थात् सभी औद्योगिक समाजों में वर्ग व्यवस्था पाई जाती है। इसके लिए मार्क्सवादी तर्क है कि ये सभी ऐतिहासिक रूप से ज्ञात समाजों में विद्यमान रहा है। लेकिन अन्य विद्वानों का तर्क है कि सामाजिक वर्ग केवल उन्हीं समकालीन समाजों में है जहाँ आर्थिक गतिविधियाँ प्रमुख रही हैं और जहाँ पर ओद्यौगीकरण का प्रसार समग्रत: निरंतर होता जा रहा है।

एक जैसे सामाजिक वर्ग के लोगों को कमोबेश एक जैसे जीवन 'अवसर मिलते' हैं अर्थात् जीवन में अच्छी वस्तुएँ प्राप्त करने की संभावनाएँ एक जैसी हैं। जैसे किसी समाज में आज़ादी, उच्च जीवन शैली, सुविधा, मूल्यवान मानी जांने वाली वस्तुएँ। किसी समाज की सामाजिक वर्गों के बीच की विषम संबद्धता जीवन शैली को प्रभावित करती है। इसलिए निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि वर्ग उन वंशानुगत परंपराओं के विपरीत होते हैं जो स्तरों में अपरिवर्तनीय मानी जाती है।

26.3 वर्ग और औद्योगिक समाज

औद्योगिक समाजों में स्तरीकरण की तीन विशेषताएँ हैं:

i) असमानता

ii) समरूपता

iii) सामाजिक गतिशीलता

i) **असमानता** : औद्योगिक समाजों में एकरूपता की प्रवत्ति होती है। अर्थात् रहन-सहन का स्तर, आर्थिक स्थिति एवं शक्ति की दृष्टि से एक समान दिखाई देते हैं। ज्यादा से ज्यादा लोग मध्यम वर्ग में शामिल हो रहे हैं। अर्थात् जनसंख्या का यह वर्ग हैसियत आमदनी और जीवन शैली में एकरूपता लिये हुये है।

इस वर्ग की असमानता एक खास पहचान बनती जा रही है जिसको हम एक हीरे की शक्ल द्वारा बता सकते हैं।

मध्यम वर्ग का यह विस्तार निम्न कारणों से है :
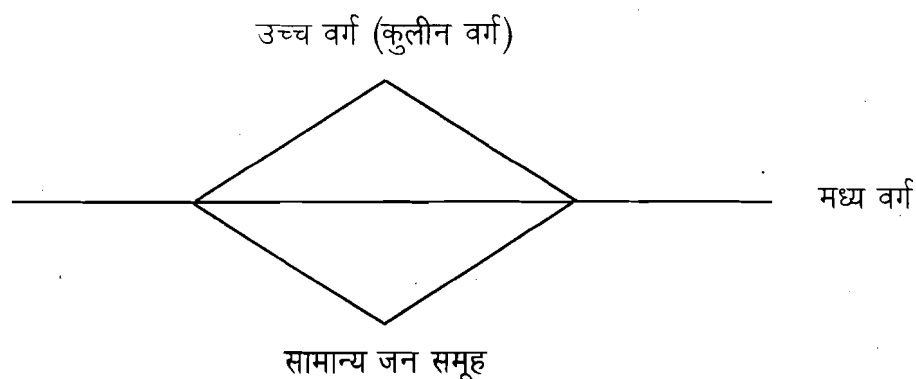
क) **श्रम विभाजन का विस्तार**
इस व्यवस्था में व्यवसाय के लिए प्रत्येक व्यक्ति के पास विशेषज्ञता होना महत्वपूर्ण हो जाता है। इस प्रकार लोगों को उसके व्यवसाय इसकी उपलब्धता, कार्य क्षमता, कुशलता आदि के अनुसार होती है।

ख) **सरकार की भूमिका में वृद्धि**
सरकार को नौकर शाही का प्रबंध करना पड़ता है। जिसके लिये तकनीकी व्यक्तियों की ज़रूरत पड़ती है। कल्याणकारी योजनाओं के लिये सरकार को ऐसे व्यक्ति या कर्मचारी चाहिए जो प्राय: मध्य आय वर्ग से ही मिलते है।

ii) समरूपता किसी स्तरीकरण व्यवस्था में किसी व्यक्ति या समूह की प्रवत्ति अपेक्षाकृत दूसरी व्यवस्था मे उन्हीं स्थितियों या वैसी ही स्थितियों जैसी अपनाने की किसी व्यक्ति अथवा समूह की प्रवृत्ति होती है।

हैसियत के प्रति जागरूकता	**बनाम उपलब्धि के प्रति जागरूक**
(परंपरागत समाज बिना किसी समरूपता के)	(इसमें समरूपता स्वयं की कुशलता और क्षमता पर निर्भर होती है)

iii) **सामाजिक गतिशीलता** : यह उद्योगीकरण से ही जुड़ा हुआ गतिशीलता का विचार है। जब समाज उद्योगीकरण के खास स्तर तक पहुँच जाता है तो गतिशीलता की दर में वृद्धि हो जाती है अर्थात् वे और ज्यादा खुले अवसर पाते हैं तथा उपलब्धि के प्रति केंद्रित रहकर अपनी योग्यता, क्षमता तथा गुणों का विकास कर लेते हैं।

26.3.1 औद्योगिक वर्ग

युक्ति संगत उद्योगीकरण से भी वैसी ही वर्ग संरचना होती है। औद्योगिक समाज वे समाज हैं जहाँ बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है। साथ ही परिवार और आर्थिक उद्यमों के बीच एक अलगाव रहता है। इसमें श्रम का विभाजन अत्यधिक तकनीकी एवं अत्यधिक लाभ कमाना ही इसका मुख्य उद्देश्य रहता है। औद्योगिक समाजों की पूँजीवादी और समाजवादी स्वरूपों के बारे में चर्चा की है।

इन समाजों की व्यावसायिक ढाँचागत विशेषताएँ समान है। अर्थात् दोनों ही व्यवस्थाएँ कामगारों की नियुक्ति करते हैं तथा सामाजिक स्तरीकरण समान है। परंतु राजनीतिक ढाँचे या शासन उनके सामाजिक सिद्धांतों और नीतियों के साथ ऐतिहासिक परिवर्तन में भिन्नता रखते हैं। (संयुक्त राज्य अमेरकिा तथा इंग्लैंड)

26.3.2 पूँजीवादी समाज की विशेषताएँ

i) उत्पादन के संसाधनों का स्वामित्व निजी हाथों में रहता है अर्थात् इसमें निजी स्वामित्व की धारणा प्रमुख होती है।

ii) अर्थव्यवस्था के नियंत्रण का विकेंद्रीकरण हो जाता है अर्थात् उत्पादन और उपभोग का संतुलन के अनुसार नहीं होता बल्कि बाज़ार के नियमों के अनुसार निर्धारित होता है। यह बाज़ार में माँग एवं पूर्ति के आधार पर चलता है जिसका केवल अनुमान किया जाता है।

iii) मालिक एवं कर्मचारी में मतभेद रहता है क्योंकि श्रमिक के पास श्रम की शक्ति होती है जिसके लिये उनको मज़दूरी मिलती है जबकि मालिकों के पास उत्पादन के साधन रहते हैं और वह श्रमिक को मज़दूरी का भुगतान करता है।

iv) क्योंकि इसमें लाभ कमाना ही मुख्य उद्देश्य होता है अत: ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने की ओर ध्यान दिया जाता है।

v) क्योंकि संसाधनों का वितरण का निर्धारण योजनाबद्ध तरीके से नहीं होता और माँग तथा आपूर्ति से बाज़ार के हर क्षेत्र में वस्तुओं के मूल्यों में उतार चढ़ाव होता है और इस प्रकार पूरी अर्थव्यवस्था में इसका सीधा असर पड़ता है।

पूँजीवादी समाज के आलोचक तर्क देते हैं कि इसमें मज़दूरों का शोषण होता है क्योंकि यह पूर्णतया लाभ केंद्रित व्यवस्था है। यह शोषण श्रमिकों की फालतू संख्या के रूप में होता है। जहाँ मज़दूर को मिलने वाली मज़दूरी अपर्याप्त होती है तथा मालिकों का मुनाफा कई गुना ज्यादा होता है और आय में असमानता की स्थिति बन जाती है। चूँकि पूँजीवादी समाजों में अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध नहीं होती इसलिये इसके चरमराने का हमेशा खतरा बना रहता है। साथ ही अतिरिक्त आमदनी से विलासिता की वस्तुएँ खरीदी जाती हैं इससे भी आय के असमान वितरण को बढ़ावा मिलता है।

बोध प्रश्न 1

1) पूँजीवादी समाजों की विशेषताओं को लगभग 10 पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) क) एक ....

ख) .... उत्पादन के साधन

ग) .... सरकार द्वारा

26.3.3 समाजवादी समाजों की विशेषताएँ

समाजवादी समाजों में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

i) उत्पादन के संसाधनों पर सरकार का नियंत्रण होता है।

ii) अर्थव्यवस्था का नियंत्रण केंद्रीय योजना अधिकरण द्वारा होता है। संसाधनों का वितरण और उपभोग योजना अधिकरण निर्धारण करता है।

iii) सोवियत अर्थव्यवस्था में श्रमिकों द्वारा उत्पादित अतिरिक्त लाभ संपूर्ण समाज को दिया जाता है क्योंकि इसका उद्देश्य कल्याणकारी रहता है।

26.3.4 पूँजीवादी समाजों में वर्ग

वर्गों में अंतर करने के लिए अनेक विद्वान आर्थिक घटक को आधार बनाते हैं। ब्रिटेन के समाजशास्त्री - एडम स्मिथ प्रथम विद्वान थे जिन्होंने आर्थिक मानदंड के आधार पर समाज में वर्ग समूहों के विभाजन की बात की। वह इनको श्रेणियाँ कहते हैं। उनके अनुसार तीन प्रकार की श्रेणियाँ हैं :

i) जो किराये के सहारे रहते हैं (किराया कमाने वाले)
ii) जो मज़दूरी के सहारे काम चलाते हैं (मज़दूरी करने वाले)
iii) जो मुनाफा कमाते हैं (पूँजीपति)

अरस्तु के अनुसार समाज में तीन वर्ग हैं। उच्च वर्ग, मध्य वर्ग तथा निर्धन वर्ग। उनके अनुसार इन तीन वर्गों में से मध्य वर्ग महत्वाकांक्षी होता है तथा समाज के विकास के लिए श्रेष्ठ होता है। उच्च वर्ग मुनाफा कमाना चाहता है तथा अपनी स्थिति बनाए रखना चाहता है। निर्धन वर्ग इतना अधिक निर्धन होता है कि उसकी इच्छा अपनी स्थिति सुधारने की होती है। इस प्रकार दो महत्वाकांक्षी वर्गों में से मध्यवर्ग अधिक अच्छा है।

बर्गेल के अनुसार वर्ग विभिन्न उपसंस्कृतियों को दर्शाते हैं जो परस्पर संबंधित होते हैं तथा विभिन्न मूलों से आते हैं। उनका यह भी मत है कि वर्गों की उपस्थिति सामाजिक विचारों में अंतर को दर्शाती है।

अभ्यास 1

किसी नगर या शहर में किसी बड़े उद्योग को देखें। उसमें श्रमिकों के विभाजन और वर्गों को देखें। अपने निष्कर्ष लिखें तथा अध्ययन केंद्र में अन्य छात्रों से चर्चा करें।

26.4 कार्ल मार्क्स : वर्ग, असमानता और पूँजीवाद

कार्ल मार्क्स के अनुसार वर्ग असमानता पैदा करता है के रूप में वर्ग व्यवस्था काफी प्रसिद्ध हुई। उन्होंने वर्ग की परिभाषा पूँजीवादी समाज के संदर्भ में की है। उन्होंने इसको स्पष्ट करने के लिए कहा है कि 'किसी समाज के उत्पादन संगठन में एक जैसा काम करने वाले व्यक्तियों का समूह वर्ग होता है'। इस प्रकार विभिन्न ऐतिहासिक कालों में वर्ग व्यवस्था के स्वतंत्र और दास (दास प्रथा) भूमि मालिक और भूमि दास (सामंती प्रथा) इस दुनिया में शोषक और शोषित विभिन्न नाम ऐतिहासिक काल में रहे हैं। मार्क्स के अनुसार सामाजिक समूहों के सदस्यों में उत्पादन वाले श्रमिक कार्य बलों में एक जैसा संबंध होता है। व्यक्तियों के समूह में एक वर्ग उत्पादन संगठन में एक ही प्रकार का कार्य करते हैं। इसका निर्धारण व्यवसाय या आमदनी से नहीं होता अपितु उत्पादन प्रक्रिया में किए जाने वाले कार्य से होता है। उदाहरण के लिए बढ़ई जिसमें से एक दुकान मालिक है और एक उसका नौकर है दोनों का कार्य एक जैसा होते हुए भी दो अलग-अलग वर्ग से संबंधित हैं।

मार्क्स के अनुसार सामाजिक वर्गों के विकास के लिए उत्पादन का संगठन होना ही काफी नहीं है। इसके लिए निम्न घटक भी होने चाहिए :

1) जनसंख्या का वास्तविक रूप से केंद्रीकरण
2) सरल संप्रेषण
3) वर्ग जागरुकता का विकास

उदाहरण के लिए छोटे किसानों की बड़ी आबादी है और एक जैसी परिस्थितियों में रहते हैं लेकिन वे एक दूसरे से पृथक हैं। उन्हें अपने सामान्य हितों की जानकारी नहीं है तथा उनका मार्क्सवादी विचारधारा में वर्ग नहीं बनता है।

किसी समाज में उत्पादन संगठन की आर्थिक स्थिति ही वर्ग की विशेषता है। मार्क्स का मत है कि प्राचीन साम्यवाद के अतिरिक्त जहाँ निजी संपत्ति की संकल्पना नहीं थी वर्ग व्यवस्था विद्यमान नहीं थी।

मार्क्स का विचार था कि पश्चिमी समाज निम्नलिखित चार मुख्य कालों में विकसित हुआ :

प्राचीन साम्यवाद	-	कोई वर्ग नहीं
प्राचीन समाज	-	मालिक व दास
सामंती समाज	-	भूमि मालिक और कृषि मज़दूर
पूँजीवादी समाज	-	बूर्जुआ व सर्वहारा वर्ग

इन वर्गों में भिन्नता अर्थव्यवस्था में उनकी स्थितियों में अंतर से पता लगती है।

26.4.1 उत्पादन का रूप

अतीत के प्रत्येक काल में उत्पादन का रूप स्थिति विशेष में समाज की सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक विशेषताओं के साथ वर्ग संबंधों की प्रकृति के बारे में भी जानकारी देता है। समाज में वर्गों की उत्पत्ति उत्पादन के विशेष रूपों के अनुसार होती है। उदाहरण के लिए उत्पादन के पूँजीवादी रूप में उच्च स्तर की तकनीक एवं पूँजी उत्पादन के साधन बन जाते हैं। इस व्यवस्था में एक वर्ग के पास उत्पादन के साधन होते हैं जबकि अन्य वर्ग उससे वंचित रहते हैं। इससे समाज का दो वर्गों अर्थात् पूँजीपति वर्ग तथा श्रमिक वर्ग में विभाजन हो जाता है।

बॉक्स 26.01

वर्ग एक दूसरे के प्रतिरोध में संघठित होने लगते हैं तथा उत्पादन व्यवस्था में एक समान हितों और आर्थिक स्तरों के कारण उनकी पहचान पक्की हो जाती है। इस व्यवस्था में पारंपरिक विरोध वर्ग संघर्ष की ओर ले जाते हैं। उत्पादन के नए रूप में एक नया समाज बन जाता है जिसमें नए वर्ग होते हैं।

26.4.2 वर्ग संघर्ष

मार्क्स के अनुसार वर्ग संघर्ष होना सभी समाजों की विशेषता है। उनका मत है कि इस संघर्ष से बचा नहीं जा सकता क्योंकि प्रत्येक समाज के शासक वर्ग में ही उसके विनाश के बीज मौजूद होते हैं और देर सबेर सामने आ जाते हैं। इस वर्ग संघर्ष में आर्थिक, राजनीतिक और वैचारिक अत्याचार होना एक विशेषता है। शोषण से विरोधी वर्ग का उदय होता है। इस प्रकार वे उस व्यवस्था से अपने को पराया महसूस करने लगते हैं जिसे बनाने में वे सहायता

करते हैं। इसे यूँ कहा जा सकता है कि श्रम के बिना पूँजीवाद टिक नहीं सकता लेकिन श्रमिक उसमें पराए ही रहते हैं। जागरुकता बढ़ने से श्रमिक वर्ग संघटित होने लगता है और जब अत्याचार के साथ टकराव होता है वे व्यवस्था को नष्ट कर देते हैं। फिर एक नई सामाजिक व्यवस्था की शुरुआत होती है तथा स्वामित्व के निजी साधनों की समाप्ति होने से वर्गवाद कम हो जाता है। उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि जब वर्ग जागरुकता विकसित होती है और वर्ग स्वत: ही अपने आप में संगठित हो जाते हैं इस प्रकार मार्क्स के अर्थों में वर्ग बन जाते हैं। इस प्रकार वर्ग से ही वर्ग बन जाता है।

इस प्रकार मार्क्स के अनुसार सामाजिक असमानता की मुख्य विशेषता है शक्ति-आर्थिक शक्ति। समाज दो वर्गों में - जो इस शक्ति को रखता है और जो इससे वंचित है, विभाजित हो जाता है अर्थात् शोषक व शोषित। मार्क्स की आर्थिक व्याख्या में इस शक्ति की असमानता को आधार बनाया गया है।

जिनके पास उत्पादन के संसाधन होते हैं उन्हीं के पास शक्ति होती है और वे इनसे वंचित व्यक्तियों पर शासन करते हैं। इस प्रकार किसी समाज में वर्ग नियंत्रण ही मुख्य विचार है।

26.4.3 वर्ग जागरुकता

वर्ग निर्माण एवं वर्ग जागरुकता की स्थितियों के बारे में मार्क्स बताता है।

i) वर्गों में आर्थिक लाभों के विभाजन के बारे में संघर्ष

ii) एक वर्ग की स्थिति के बारे में उसी वर्ग के व्यक्तियों में आसानी से संप्रेषण ताकि विचार और कार्यक्रमों का पहले ही प्रचार किया जा सके।

iii) वर्ग विकास वर्ग जागरुकता जिसमें सभी सदस्यों में परस्पर संबद्धता तथा अपने ऐतिहासिक भूमिका के महत्व की भावना होती है।

iv) उस आर्थिक व्यवस्था पर नियंत्रण न कर पाने की अयोग्यता जिस पर निम्न वर्ग का गहन असंतोष होता है। यह असंतोष उनके प्रति होता है जिसे वह शोषक मानती है।

v) आर्थिक व्यवस्था के परिणाम स्वरूप राजनीतिक संगठन की स्थापना, ऐतिहासिक परिस्थितियाँ तथा वर्ग-जागरुकता में वृद्धि होना।

प्रत्येक काल में शासक वर्ग का विचार शासन करते रहने के विचारों को निर्धारित करता है। जैसे समाज में संसाधनों पर अधिकार रखने वाला वर्ग उसी समय प्रबुद्ध वर्ग पर भी शासन करता है। किसी काल विशेष में क्रांतिकारी विचारों की उपस्थिति क्रांतिकारी वर्ग की उपस्थिति की पूर्व संभावना होती है। उत्पादन के सभी संसाधनों में स्वयं क्रांतिकारी वर्ग सबसे बड़ी उत्पादन शक्ति है। इस प्रकार वह वर्गों को ऐसे विशिष्ट उप विभाजनों में बाँटता है जिनके हित प्राय: भिन्न-भिन्न होते हैं। मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य में हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बड़े सामाजिक वर्गों में संबंध एक परस्पर निर्भरता और संघर्ष पर आधारित होते हैं।

26.4.4 पूँजीवादी औद्योगिक समाज

इस प्रकार मार्क्सवादी पूँजीवादी समाज में दो मुख्य वर्ग होते हैं। एक पूँजीपति (बूर्जुआ) जो मज़दूरी देता है तथा दूसरा (सर्वहारा) जो मज़दूरी प्राप्त करता है। मार्क्स भविष्यवाणी करता है चूँकि पूँजीवाद का विकास होने से ये दोनों वर्ग और अधिक समानांतर होते हैं। इसके विपरीत डेहेंड्रोफ का मत है कि वर्ग अधिक से अधिक विषम हो जाएँगे अर्थात् उनमें विभिन्नताएँ

बढ़ेगी तथा श्रमिक वर्ग तीन विशेष श्रेणियों में अकुशल, अर्धकुशल तथा कुशल श्रमिकों में विभाजित हो जाएँगे। इनके स्वार्थ भी अलग अलग होंगे।
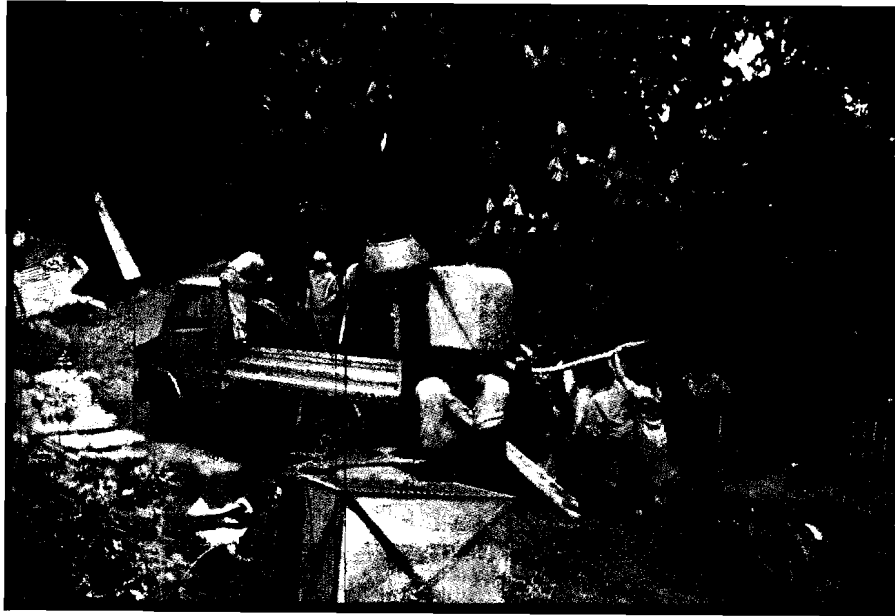
औद्योगिक समाज अत्यधिक पूँजी और प्रौद्योगिकी आधारित होता है।

साभार: बी. किरण मई

कार्ल मार्क्स जिन दो वर्गों की बात करता है इससे भिन्न वेबर मध्य वर्ग की भी बात करता है। उसके अनुसार पूँजीवाद के विकास से मध्य वर्ग में भी विस्तार होता है। 19वीं शताब्दी में मार्क्स ने भविष्यवाणी की थी एक ऐसी स्थिति आएगी कि पूँजीवाद के विकास में मध्य वर्ग सर्वहारा वर्ग बन जाएगा। लेकिन 1950 और 1960 के दशकों में अनेक विद्वानों ने प्रस्तुत किया कि स्थिति इसके विपरीत थी।

उनका मत था कि जहाँ बूर्जुआ प्रक्रिया घटित हो रही थी वहीं श्रमिकों की संख्या भी मध्य वर्ग में शामिल हो रही थी। उनके अनुसार औद्योगिक समाज में वर्ग पेंटागॉन आकार (पंचभूजी आकार) ले रहा था जहाँ सबसे अधिक आबादी श्रमिकों की अपेक्षा मध्य वर्ग की थी। क्लार्क केर के अनुसार यह विकसित उद्योगीकरण की आवश्यकता थी जिसमें उच्च शिक्षित, प्रशिक्षित तथा कुशल श्रमिक कार्य बल की आवश्यकता थी।

26.5 मैक्स वेबर : औद्योगिक वर्ग

वेबर का तर्क है कि वर्ग बाज़ार अर्थव्यवस्था में उत्पन्न होते हैं जिसमें व्यक्ति आर्थिक लाभों के लिए प्रतियोगिता करते हैं। उनका मत है, 'एक जैसी आर्थिक स्थिति को भोगने वाले व्यक्तियों के भौतिक स्तर और निजी जीवन को प्रभावित करने वाली स्थितियाँ, उनके स्तर और जीवन शैली का निर्धारण करती हैं। इस प्रकार वेबर के मतानुसार व्यक्ति की वर्ग स्थिति मूलतः उसकी बाज़ार स्थिति होती है जबकि मार्क्स के मतानुसार वर्ग संबंध परस्पर निर्भरता और संघर्ष पर आधारित है।

मार्क्स की तरह वेबर वर्गों को आर्थिक संदर्भ में भी देखता है। लेकिन वह उनकी बाज़ार स्थितियों को महत्वपूर्ण अंतरों के रूप में देखता है। कहने का तात्पर्य यह है कि विभिन्न व्यवसायों का बाज़ार मूल्य भी भिन्न-भिन्न होता है। उदाहरण के लिए इंजीनियरों और बिजली के कारीगरों का बाज़ार मूल्य अलग-अलग होगा। इस प्रकार वेबर के मत में व्यक्ति की वर्ग स्थिति मूलतः उसकी बाज़ार स्थिति होती है। जिन व्यक्तियों की वर्ग स्थिति एक जैसी होती है उनके जीवन अवसर भी समान होते हैं। उनकी आर्थिक स्थिति समाज में वांछित वस्तुओं को प्राप्त करने के अवसरों की प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। जैसे उच्च शिक्षा और अच्छे आवास प्राप्त करने के अवसर।

मार्क्स की तरह वह भी इस बात से सहमत है कि संपत्ति मालिक तथा संपत्ति विहीन दो वर्ग होते हैं। लेकिन वह समाज में संपत्ति विहीन समूहों के वर्गों की बाज़ार स्थिति में महत्वपूर्ण अंतर मानता है अर्थात् भूमि विहीन वर्गों में कुशलता व्यावसायिक क्षमता तथा योग्यता में अंतर होने के कारण अनेक वर्ग हैं जो इस प्रकार हैं :

i) संपत्ति वाला उच्च वर्ग

ii) भूमि विहीन सफेदपोश श्रमिक

iii) छोटे बूर्जुआ वर्ग

iv) हाथ से काम करने वाला श्रमिक वर्ग

इनका निर्धारण बाज़ार में उनके व्यावसायिक शिल्प के मूल्यों के अनुसार किया गया है। जिनका व्यावसायिक शिल्प दुर्लभ था बाज़ार में उनका वेतन अधिक था और उनका एक अलग वर्ग बन गया। वेबर दो वर्गों के ध्रुवीकरण से सहमत नहीं है। वह सफेदपोष या कुशल श्रमिकों के मध्य वर्ग की बात करता है। पूँजीवाद के विकास के साथ-साथ मध्यवर्ग का भी विस्तार होता है। उसका तर्क है कि आधुनिक राष्ट्रों के राज्य में तर्क संगत नौकरशाही व्यवस्था में लिपिकों और प्रबंधकों की आवश्यकता होती है।

बॉक्स 26.02

मार्क्स से भिन्न वेबर का तर्क है कि एक वर्ग के व्यक्ति आवश्यक नहीं कि एक जैसा सामुदायिक कार्य करें या उस वर्ग में एक समान वर्ग जागरुकता हो। यह हो सकता है कि उनका व्यवहार समान हो और मतदान का दृष्टिकोण समान हो या फिर मद्यपान की आदतें समान हो। वेबर वर्ग क्रांति की अनिवार्यता से सहमत नहीं है। हो सकता है क्रांति करना उनके लिए जरूरी न हो। वर्ग जागरुकता हो तो सकती है लेकिन वह भिन्न प्रकार की होगी। जैसे भारत में जातीय वर्ग।

निम्न वर्ग के व्यक्ति सुधार के लिए प्रयत्न कर सकते हैं। इस उद्देश्य के लिए माँग करने में तो वे संगठित हो सकते हैं लेकिन व्यवस्था परिवर्तन में बड़ी क्रांति कभी नहीं होती। दूसरा उदाहरण भी देखा जा सकता है औद्योगिक हड़ताल वहाँ तालाबंदी हो सकती है लेकिन व्यवस्था परिवर्तन के लिए क्रांति कभी नहीं होती।

वेबर के अनुसार श्रमिकों द्वारा व्यवस्था परिवर्तन संभव नहीं है। क्योंकि किसी व्यवस्था पर चोट करने के लिए एक सैद्धांतिक व्यवस्था का होना आवश्यक है जिसके लिए एक प्रबुद्ध वर्ग अर्थात् कुलीन समूह आवश्यक है। अत: ऐसा कार्य करने के लिए एक सैद्धांतिक व्यवस्था के बिना अशिक्षित लोगों द्वारा क्रांति संभव नहीं।

26.6 गिड्डेंस, पार्किन तथा बर्गेल

एँथोनी गिड्डेंस औद्योगिक समाज में तीन बड़े वर्ग मानता है विशेषत: पूँजीवादी समाज में आर्थिक मानदंड के आधार पर निम्नलिखित वर्ग होते हैं :

i) उच्च वर्ग - उत्पादन संसाधनों के मालिक
ii) मध्य वर्ग - तकनीकी योग्यता रखने वाले
iii) निम्न वर्ग - हाथों से काम करने वाले श्रमिक

फ्रैंक पार्किन आधुनिक पूँजीवादी समाज में सामाजिक वर्गों का व्यावसायिक वर्गीकरण करता है। लाभ प्राप्त करने की शक्ति प्रत्यक्ष रूप से व्यावसायिक कुशलताओं की माँग से संबंधित है। यह दावा नहीं माना जा सकता कि उच्च वर्ग चतुराई तथा उपलब्धि में श्रेष्ठ होता है। लेकिन एक सूक्ष्म अध्ययन दर्शाता है कि परीक्षण कार्य निष्पादन का होता है न कि चतुराई का और कार्य का निष्पादन न केवल योग्यता अपितु विशेष प्रशिक्षण पर भी निर्भरता करता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षित/प्रशिक्षित कर्मचारियों को उच्च वेतन - उच्च व्यावसायिक स्तर प्राप्त होता है। इस प्रकार बाज़ार में उनकी अधिक माँग के कारण मध्य वर्ग के उत्थान में सहायता मिलती।

बोध प्रश्न 2

1) उत्पादन के रूप और इससे संबंधित वर्ग संघर्ष पर एक टिप्पणी लिखें। उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) सही या गलत बताइए

मार्क्स के अनुसार व्यक्ति की वर्ग स्थिति मूलत: उसकी बाज़ार स्थिति होती है।

गलत/ सही

बर्गेल के अनुसार वर्ग स्वभाविक रूप से आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक वर्ग होते हैं। वर्गों के बारे में उनके चार विचार हैं :

i) किसी समाज में भूमि व्यवस्था के समाप्त होने से वर्गों का उदय हुआ। उदाहरण के लिए यूरोप में वैधानिक व्यवस्था समाप्त होने से उपलब्धि के मानदंडों से एक मुक्त समाज का विकास हुआ।
ii) वर्गों में कोई सिद्धांत नहीं होता वे अवशिष्ट श्रेणियाँ होती हैं।
iii) वह वर्ग के विचार को संघर्ष के रूप में देखता है जहाँ विजेता उच्च वर्ग का और पराजित समूह निम्न वर्ग का होता है।
iv) स्तरीकरण व्यवस्था में जैविक अंतरों का भी प्रभाव पड़ता है जैसे गोरे काले रंग से श्रेष्ठ माने जाते हैं।

बर्गेल का तर्क है कि धन कुछ वर्गों और स्वामित्वों में केंद्रित हो सकता है। इसी तरह शक्ति पर भी एकाधिकार हो सकता है।

उनके अनुसार वर्ग विभिन्न उन संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परस्पर एक दूसरे से संबंधित होते हैं और अलग-अलग मूल घटकों से उत्पन्न होते हैं। उनका तर्क है कि लगभग संपूर्ण वर्ग व्यवस्था इस धारणा पर आधरित है कि सभी व्यक्ति मुक्त बन समान उत्पन्न होते हैं। फिर भी वास्तविक रूप में वर्गों में गहन भेद होते हैं जो उनमें नहीं होने चाहिएँ।

26.7 समाजवादी समाजों में वर्ग संरचना

इसमें स्तरीकरण बाज़ार अर्थव्यवस्था के कारण नहीं होता अपितु विशिष्ट राजनीतिक वर्ग के कारण होता है। जबकि पूँजीवादी समाज में अनेक विशिष्ट वर्ग होते हैं। उदाहरण के लिए अमरीकी समाज में सी आर मिल्स की संकल्पना के अनुसार विशिष्ट वर्गों की तीन श्रेणियाँ हैं। फिर भी, सोवियत समाज में केवल एक ही विशिष्ट वर्ग है : राजनीतिक वर्ग। इन कुलीन या विशिष्ट वर्गों का एक स्वार्थी समूह बन जाता है। स्तरीकरण नौकरशाहों द्वारा लागू राज्य का प्रयास है। यह एक जैसा विशिष्ट वर्ग समाज को शासक बनाम कृषक/मज़दूर/श्रमिक/ जनता में विभाजित कर देता है। समाजवादी समाजों में वर्गों का अध्ययन करने वाले विद्वानों का कथन है कि 'वर्ग' शब्द के प्रयोग के स्थान पर यहाँ 'स्तर' शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए मुख्य स्तर इस प्रकार है :

i) प्रबुद्ध स्तर वर्ग
   क) कुलीन शासक
   ख) श्रेष्ठ प्रबुद्धजन
   ग) सामान्य प्रबुद्धजन

ii) शासक वर्ग
   क) कुलीन वर्ग
   ख) सामान्य जन श्रेणी
   ग) वंचित श्रमिक

iii) किसान वर्ग
   क) संपन्न किसान
   ख) सामान्य किसान

मार्क्स की भविष्यवाणी थी कि उत्पादन संसाधनों पर जनता का स्वामित्व होना बूर्जुआ समाज की तरफ पहला चरण है। सभी सदस्य उत्पादन संसाधनों में समान रूप से भागीदार होंगे। उनका मानना था कि राज्य द्वारा अलग हो जाने से वस्तुओं का उपभोग एवं सेवाएँ प्रत्येक की आवश्यकताओं के आधार पर निर्धारित होंगी। सोवियत समाज का अध्ययन करने वालों ने इसकी वर्ग संरचना का भी अध्ययन किया। फ्रैंक पार्किन ने विभिन्न आर्थिक उपलब्धियाँ, व्यावसायिक हैसियत और शक्ति के आधार पर विभिन्न वर्गों का पता लगाया है। ये हैं :

i) प्रबंधकीय और प्रशासनिक स्थिति
ii) कुशल श्रमिक स्थिति
iii) निम्न या अयोग्य सफेदपोश स्थिति
iv) अकुशल श्रमिक स्थिति

यद्यपि सोवियत समाज में आमदनी की समानता पूँजीवादी समाजों की तरह प्रधान तो नहीं है तो भी इसका महत्व अवश्य है।

मिलोविन डिजीलस के अनुसार समाजवादी समाज में वर्ग नहीं होते। पश्चिम के बूर्जुआ समूहों को पूर्व के नए शासक वर्ग ने हटा दिया। इस नए वर्ग में राजनीतिक नौकरशाह थे जिनमें से अधिकांश साम्यवादी दल के उच्च अधिकारी शामिल थे। उन्होंने आगे अपने स्वार्थों के लिए अपने अधिकारों का प्रयोग किया। यद्यपि कानूनी रूप में उत्पादन संसाधनों पर सामुदायिक स्वामीत्व था लेकिन व्यावहारिक रूप में इस नए वर्ग ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए उन पर नियंत्रण कर लिया। ये राजनीतिक नौकरशाह अर्थव्यवस्था का नियंत्रण एवं संचालन करते थे तथा उत्पादन, उपभोग और प्रक्रियाओं आदि के निर्णयों पर इनका संपूर्ण एकाधिकार था। इन सबके परिणामस्वरूप इस वर्ग में तथा सामान्य जनता के बीच व्यापक आर्थिक अंतर देखा गया जिसका संबंध उच्च विशेषाधिकार तथा हैसियत से था। डिजीलस के अनुसार बाद के सोवियत संघ के शासक वर्ग बूर्जुआ समूह से अधिक शोषणकर्ता बन गए थे। इनके अधिकार भी अत्यधिक थे क्योंकि उन पर राजनीतिक दलों का नियंत्रण नहीं था। उनका तर्क है कि एक ही राजनीतिक दल वाले राज्य में नौकरशाह एकाधिकार युक्त शक्तियों का प्रयोग करते हैं। वह मार्क्स से सहमत हैं कि व्यवहारिक रूप से उनकी शक्तियों का स्रोत इसलिए है कि उत्पादन संसाधन उनके नियंत्रण में हैं।

दूसरे विद्वान इससे सहमत नहीं हैं। उनका तर्क है कि सोवियत समाजों में आर्थिक शक्तियाँ राजनीतिक अधिकारों से मिलती हैं। टी.बी. बोटोमोरे के अनुसार नया वर्ग उत्पादन संसाधनों का नियंत्रण अपनी राजनीतिक शक्तियों के कारण ही करता है।

पोलिश विद्वान वेसोलोस्किस के अनुसार यद्यपि सामाजिक स्तर तो विद्यमान है लेकिन मार्क्सवादी अर्थ में वर्गों की अनुपस्थिति ने संघर्ष के बुनियादी कारणों को समाप्त कर दिया। वह पुन: कहता है कि समाज में कोई छोटा वर्ग बड़ी आबादी का शोषण नहीं कर सकता। वह यह भी कहता है कि विभिन्न स्तरों के बीच स्वार्थों के लिए कोई बड़ा संघर्ष भी नहीं है क्योंकि उत्पादन संसाधनों पर सामुदायिक स्वामित्व है तथा प्रत्येक वर्ग सबके फायदे के लिए कार्य करता है। फिर भी कुछ आर्थिक असमानताएँ हैं जो उनके कार्य के अनुसार वाले सिद्धांत पर आधारित हैं। समाज का मत है कि सामाजिक उत्पादन में व्यक्ति की हिस्सेदारी का विभाजन, व्यक्ति की योग्यता, कार्य की मात्रा कार्य की क्वालिटी के अनसार

निर्धारित होती है। यह इसलिए होता है कि दिए गए किसी कार्य को करने के लिए उनके पास आवश्यक कुशलता का स्तर और शिक्षा होती है।

अभ्यास 2

समाजवादी समाज किन अर्थों में पूँजीवादी समाज से भिन्न होता है। विभिन्न व्यक्तियों से चर्चा करें तथा बताएँ कि भारतीय समाज क्या है? अध्ययन केंद्र पर अन्य छात्रों से अपने अध्ययन की तुलना करें।

'नए वर्ग' और पश्चिम के बूर्जुआ वर्ग में मुख्य अंतर यह है कि पश्चिम में संपत्ति का हस्तांतरण पिता से पुत्र को हो जाता है जबकि पूर्व में संपत्ति पर किसी सदस्य/पुत्र आदि का कोई कानूनी हक नहीं होता। उनका अधिकार मुख्यत: राजनीतिक दरबार में होता है जिसे सीधे ही पुत्रों में हस्तांतरित नहीं किया जा सकता।

वेसोलोस्की का तर्क है कि समाजवादी समाज में रूढ़िवादी अर्थों में वर्ग समाप्त हो गए हैं तथा उनकी अधिक स्पष्ट व्याख्या स्तरों के रूप में वर्णन द्वारा की जा सकती है।

चाहे पूँजीवादी समाज हो या समाजवादी समाज दोनों में ही लाभ की धारणा प्रमुख है। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि सही कार्य करने वाली संस्थाएँ ही लाभ उठा सकती हैं। फिर भी योजना की अर्थव्यवस्था में अनेक उद्योगों में व्यापक संसाधन लगाए जाते हैं जिनसे लाभ नहीं होता।

26.8 पूँजीवादी तथा समाजवादी समाजों की तुलना

प्राय: योजनागत अर्थव्यवस्था अर्थात् समाजवादी समाज की आलोचना में तर्क दिया जाता है कि संपूर्ण योजना के अधिकारों में योजनाकारों की निरकुंश या संपूर्ण शक्तियों का केंद्रीयकरण हो जाता है। यह अधिकारों का संघटन है। इससे श्रमिकों के प्रतिनिधियों, किसानों तथा औद्योगिक क्षेत्र में विषमता फैल जाती है। ऐसा इसलिए होता है कि वे राष्ट्रीय संसाधनों का उचित हिस्सा निर्धारित करना चाहते हैं। आलोचकों का तर्क है कि इस तरह की आर्थिक व्यवस्था में उपभोक्ताओं की पसंद का ध्यान नहीं रखा जाता।

इस प्रकार हम पूँजीवादी समाज तथा समाजवादी समाज में अंतर देख सकते हैं जो इस प्रकार है :

पूँजीवादी समाज	समाजवादी समाज
पूँजीवादी समाज में संपत्ति मालिकों तथा संपत्तिविहीन व्यक्तियों में काफी अंतर होता है।	समाजवादी समाज में संपत्ति अंतर के कारण असमानताएँ तो नहीं होती लेकिन आमदनी के आधार पर असमानताएँ होती है।
संपत्ति से आमदनी तथा कार्य से आमदनी में अंतर होता है पूँजीपति राजनीतिक नेता भी होते हैं।	आर्थिक क्षेत्र अलग होता है तथा राजनीतिक क्षेत्र अलग।
	संपूर्ण सामाजिक समूहों में अंतर कम होता है तथा उनमें अंतर का महत्व भी कम होता है।

	व्यक्ति ही राजनीतिक/विशिष्ट व स्तर तक पहुँचता है वर्ग या समूह नहीं।
स्तरीकरण आर्थिक व्यवस्था के कारण होता है जैसे अमरिकी समूह में गौरों+कालों में देखा जा सकता है।	प्राय: संघर्ष को किसी न किसी प्रकार के विरोध से दबा दिया जाता है (जैसे समाज के प्रबुद्ध नेताओं के द्वारा) लेकिन डाहरेंडोर्फ के अनुसार स्वार्थ के लिए समूहों में संघर्ष होता है जो समन्वित कुलीनों में भी देखा जा सकता है।
पूँजीवादी समाज में संगठनों के बनने और स्थापित होने की संभावना होती है जो सत्ता के कुलीन वर्ग की शक्ति का विरोध करें।	सोवियत समाजों में कोई शोषित वर्ग नहीं होता, किसी प्रकार का विरोध नहीं होता जैसा कि मार्क्स ने कहा है किसी प्रकार का राजनीतिक विद्रोह भी नहीं होता लेकिन किसान विद्रोह हुआ है जैसे 1930 के दशक में केंद्रीकरण की धारणा के विरोध में सरकार के खिलाफ किसानों का विद्रोह। सोवियत समाजों में वर्ग संघर्ष के अलावा भी संघर्ष के अन्य स्रोत देखें जा सकते हैं।
संसाधनों का वितरण पूँजीपतियों द्वारा स्वयं किया जाता है	वस्तुओं का असमान वितरण सरकारी एजेंसियों द्वारा किया जाता है।
वेतन/मज़दूरी तथा आमदनी पूँजीपतियों द्वारा करती निर्धारित की जाती है।	मज़दूरी/वेतन या आमदनी सरकार निर्धारित है।
आमदनी तथा वेतनों के मध्य संबंध गहन तथा मजबूत होता है और परस्पर संबंधित है।	आमदनी का असमान वितरण के बीच परस्पर संबंध पूँजीवादी समाज से कम होता है।
स्तर का निर्धारण पूँजी के स्वामित्व के अनुसार होता है अर्थात् आपके पास पूँजी है या नहीं।	शिक्षा और व्यावसायिक स्तर के बीच गहरा संबंध होता है। (व्यावसायिक स्तर)
संगठन अर्थात् बाज़ार नियंत्रण स्थान है व्यक्ति बाज़ार में अर्थव्यवस्था का निर्णय - करते हैं। अर्थव्यवस्था की कोई योजना नहीं होती। उत्पादन संसाधनों पर व्यक्तियों का अधिकार होता है।	संगठन संसाधनों के वितरण के लिए एक तथा महत्वपूर्ण केंद्रीय योजना एजेंसी होती है। जिसका वितरण योजनाबद्ध होता है। उत्पादन संसाधनों पर सामुदायिक अधिकार होता है।
उद्देश्य है मुनाफा अर्जित करना।	कोई आर्थिक उद्देश्य नहीं होता अर्थात् इसमें उद्देश्य कल्याणकारी होता है।
असमानता सोच समझ कर नहीं की जाती अपितु व्यवस्था के कारण होती है। उत्पादन, उपभोग तथा वितरण ढंग नियंत्रित किया जा सकता है।	सोवियत संरचना में राजनीतिक क्षेत्र के अनुरूप नीति के अनुसार असमानता की जाती है।

	उपभोक्ताओं की आवश्यकताएँ महत्वपूर्ण होती हैं जो संसाधनों के वितरण को प्रभावित करती है।
आर्थिक गतिविधियाँ असमानता का निर्णय करती है।	स्तरीकरण आर्थिक आधार पर नहीं अपितु राजनीतिक आधार पर होता है।

26.9 सारांश

हाल ही के वर्षों में दोनों औद्योगिक समाजों में आर्थिक असमानताओं की विद्यमानता को देखा जा सकता है। समाजों का उद्देश्य अपने सभी सदस्यों को रोज़गार देना, श्रमिक वर्ग की आमदनी में वृद्धि करना तथा सभी को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है जो अभी तक उच्च वर्ग हमेशा अपना एकाधिकार मानता था। हाल के वर्षों में घरेलू नौकर वर्ग व्यवस्था को लगभग पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। यह एक बड़ी उपलब्धि है जिसे श्रमिक वर्ग ने 20वीं शताब्दी में प्राप्त किया है। इस प्रकार वे उच्च वर्ग की दासता से बच गए हैं। मुख्य उद्देश्य समाज को गुलामी और दलित वर्ग में विभाजित होने से रोकना है।

20वीं शताब्दी में विभिन्न वर्गों के बीच संबंध 19वीं शताब्दी के संबंधों से अलग थे। 20वीं शताब्दी में संपूर्णत: सामाजिक सेवाओं ने आर्थिक परिणामों के कारण होने वाली असमानताओं को समाप्त करने के लिए काफी प्रभावित किया।

औद्योगिक समाजों में आर्थिक विकास के कारण प्राय: सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई लेकिन अधिक वृद्धि व्यावसायिक संरचना में हुए परिवर्तनों के कारण हुई। यह मुख्यत: सफेदपोश और व्यावसायिक वर्गों की वृद्धि तथा निरंतर हाथ से काम करने वाले श्रमिकों के कारण हुई।

प्रगतिशील कराधान, भूमि कर तथा आयकरों के माध्यम से धन तथा आमदनी पुनर्वितरण करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया जा रहा है। इसलिए जीवन स्तर में समानता तथा मध्य वर्ग में उत्थान हो रहा है।

26.10 शब्दावली

पूँजीपति (Capitalist) : समाज में उत्पादन के संसाधन निजी स्वामित्व में हो

औद्योगिक (Industrial): जहाँ भारी मशीनों, उद्योगों आदि पर जोर दिया जाता है।

समाजवाद (Socialist) : ऐसे समाजों में अधिकांश उद्योग और योजनाएँ राज्य के नियंत्रण में होती है।

26.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बोटोमोर, टी (संपादित) 1973, *मार्क्सवादी विचारों का कोष,* ब्लैकवेल, आक्सफोर्ड।

वबर, एम 1964, *सामाजिक और आर्थिक संगठनों के सिद्धांत* (अनुवाद एवं प्रकाशित हेंडर्सन ए एम तथा पार्सस, टी) फ्री प्रैसग्लेंका।

26.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पूँजीवादी समाज में उत्पादन संसाधनों पर निजी स्वामित्व होता है। फिर उत्पादन एवं उपभोग बाज़ार की शक्तियों के अनुसार नियंत्रित होते हैं। फिर नियोक्ता तथा नियुक्त अर्थात् कर्मचारी में अंतर होता है। मालिक कर्मचारी को वेतन देता है। संपूर्ण व्यवस्था का उद्देश्य मुनाफा कमाना तथा उसे अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है। फिर वस्तुओं का मूल्य माँग और पूर्ति आधार पर निर्धारित होता है। यह भी देखा गया है कि पूँजीवाद के आलोचक श्रेणियों के शोषण और दोगले व्यवहार की बात करते हैं तथा व्यवस्था के नष्ट होने की आशा करते हैं।

2) क) समाजवादी

   ख) अर्थव्यवस्था

   ग) स्वामित्व

बोध प्रश्न 2

1) उत्पादन का रूप मार्क्स के विचार के अनुसार एक संकल्पना है। प्रत्येक समाज की व्यवस्था में एक विशेष उत्पादन का ढंग होता है। पूँजीवादी समाज में उत्पादन का रूप पूँजीवादी होता है जिसमें अत्यधिक पूँजी निवेश वाले उद्योग होते हैं। वे बूर्जुआ जिनके पास उत्पादन के संसाधन होते हैं श्रमिकों का शोषण करते हैं और वर्ग संघर्ष क्रांति करने की सीमा तक बढ़ जाती हैं। श्रमिक पूँजीपतियों को समाप्त कर वर्ग रहित समाज की नई संरचना करते हैं जहाँ उत्पादन संसाधनों का स्वामित्व सामूहिक होता है। इस प्रकार एक वर्ग रहित समाज का प्रादुर्भाव होता है।

2) गलत